International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-04-2026, Accepted: 18-05-2026, Published: 02-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 147-150

आधुनिक समय में ख्याल लोकनाट्य के संरक्षण की चुनौतियाँ कुचामनी ख्याल के विशेष संदर्भ में

राम कुमार[1], डॉ. रेहाना बेगम[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत
[2] सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12152

सारांश
राजस्थान की लोककला परंपराओं में ख्याल लोकनाट्य एक अत्यंत समृद्ध एवं जीवंत विधा रही है। विशेषतः कुचामनी ख्याल, जो नागौर जिले के कुचामन शहर से उद्भूत हुई, राजस्थानी लोकनाट्य की सबसे लोकप्रिय एवं प्रतिनिधि शैलियों में से एक मानी जाती है। प्रस्तुत शोधपत्र आधुनिक समय में इस लोककला के समक्ष उत्पन्न संरक्षण की चुनौतियों का विश्लेषण करता है। इसमें सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक कारकों की पड़ताल की गई है जो इस परंपरागत लोकनाट्य के अस्तित्व को खतरे में डाल रहे हैं। शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है। निष्कर्षतः यह पत्र संरक्षण के व्यावहारिक उपायों की अनुशंसा करता है ताकि इस अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

मूल शब्दः कुचामनी ख्याल, लोकनाट्य, राजस्थानी लोककला, सांस्कृतिक संरक्षण, अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर, लोक परंपरा।

भारत की सांस्कृतिक विविधता में लोकनाट्य का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। लोकनाट्य वे नाटकीय प्रस्तुतियाँ हैं जो किसी क्षेत्र विशेष की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं से उद्भूत होकर पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती हैं। राजस्थान, जो अपनी समृद्ध लोक–संस्कृति के लिए विश्व–प्रसिद्ध है, में ख्याल एक ऐसी नाट्यशैली है जिसने सदियों से ग्रामीण जनमानस का मनोरंजन करते हुए सामाजिक चेतना का प्रसार किया है (कोठारी, 1975)।

ख्याल शब्द मूलतः अरबी–फ़ारसी परंपरा से आया है, किंतु राजस्थान में यह एक विशिष्ट लोकनाट्य रूप के रूप में विकसित हुआ जिसमें संगीत, नृत्य, हास्य एवं सामाजिक व्यंग्य का अद्भुत समन्वय है। कुचामनी ख्याल, जयपुरी ख्याल, शेखावाटी ख्याल, हेला ख्याल तथा तुर्रा–कलंगी ख्याल इसकी प्रमुख शैलियाँ हैं (सक्सेना, 1985)। इनमें कुचामनी ख्याल की विशेष पहचान इसकी जीवंत प्रस्तुति, चुटीले संवाद, लोचदार संगीत एवं सामयिक व्यंग्य के कारण रही है।

आज के डिजिटल युग में यह लोकनाट्य परंपरा गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। टेलीविजन, मोबाइल और इंटरनेट के प्रसार ने परंपरागत मनोरंजन के स्वरूप को पूर्णतः बदल दिया है। नई पीढ़ी इन लोक–माध्यमों से दूर होती जा रही है और कलाकारों की आजीविका खतरे में पड़ गई है। ऐसे में कुचामनी ख्याल के संरक्षण का प्रश्न न केवल एक सांस्कृतिक बल्कि सामाजिक आवश्यकता बन चुका है।

ख्याल लोकनाट्य: एक परिचय

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ख्याल की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ शोधकर्ता इसे मुगलकालीन सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ते हैं, जबकि अन्य इसे भक्तिकालीन नाट्य–परंपरा का विस्तार मानते हैं। डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार राजस्थान में ख्याल का उद्भव लगभग 17वीं–18वीं शताब्दी में हुआ जब मेले–ठेलों और धार्मिक उत्सवों में जनमानस के मनोरंजन के लिए इस नाट्य–विधा का विकास किया गया (भानावत, 1988)।

राजस्थान के विभिन्न अंचलों में ख्याल की अलग–अलग शैलियाँ विकसित हुईं। जयपुर, शेखावाटी, जोधपुर एवं नागौर क्षेत्रों में इसके विशिष्ट रूप प्रचलित हुए। प्रत्येक शैली की अपनी संगीत–शैली, वेशभूषा एवं अभिनय–पद्धति रही है। ये लोकनाट्य परंपराएँ उस क्षेत्र की भाषा, बोली एवं सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिनिधि रही हैं (शर्मा, 1990)।

2. कुचामनी ख्याल: विशेषताएँ एवं महत्त्व

कुचामनी ख्याल राजस्थान के नागौर जिले के कुचामन कस्बे से उद्भूत एक विशिष्ट लोकनाट्य शैली है। यह शैली मुख्यतः लच्छीराम जी तथा उनके शिष्यों द्वारा विकसित की गई। इसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

प्रथमतः, कुचामनी ख्याल में हास्य एवं व्यंग्य का प्राधान्य है। इसके संवाद अत्यंत चुटीले एवं सामयिक होते हैं जो तत्कालीन सामाजिक समस्याओं पर करारी चोट करते हैं। द्वितीयतः, इसमें संगीत की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। राजस्थानी लोकसंगीत के रागों पर आधारित गीत, जो "ख्याल–गायन" कहलाते हैं, इस नाट्यशैली की जान हैं। तृतीयतः, इसमें स्त्री–पात्रों की भूमिका पुरुष कलाकार निभाते हैं, जिसे "नट" या "बेड़िन" कहा जाता है। यह परंपरा मध्यकालीन भारतीय नाट्य–परंपरा की अनुगूँज है (भानावत, 1988)।

कुचामनी ख्याल के प्रमुख विषय सामाजिक कुरीतियाँ, प्रेम–प्रसंग, पौराणिक आख्यान एवं समसामयिक घटनाएँ रहे हैं। "राजा हरिश्चंद्र", "पृथ्वीराज चौहान", "भक्त पूरणमल", "हीर–रांझा" जैसे प्रसंगों के साथ–साथ आधुनिक सामाजिक मुद्दों पर भी नाटक प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। इस कारण यह विधा अपने युग की साहित्यिक एवं नाट्य–परंपरा का दर्पण रही है (चतुर्वेदी, 2003)।

संरक्षण की चुनौतियाँ

1. आर्थिक चुनौतियाँ

कुचामनी ख्याल के कलाकारों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। परंपरागत रूप से ये कलाकार गाँव–गाँव घूमकर प्रस्तुतियाँ देते थे और जनता से प्राप्त "नेग" अथवा दान पर निर्भर रहते थे। आधुनिक काल में जनता का रुझान इन प्रस्तुतियों से कम हुआ है, जिससे कलाकारों की आय में भारी कमी आई है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (2019) की एक रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान के अधिकांश लोककलाकार वर्ष में 100 दिन से भी कम काम कर पाते हैं और उनकी औसत वार्षिक आय न्यूनतम मजदूरी से कम है।

इस आर्थिक संकट का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि कलाकारों की अगली पीढ़ी इस पेशे को अपनाने से विमुख हो रही है। लच्छीराम जी के वंशज एवं शिष्य बताते हैं कि उनके बच्चे ख्याल सीखने की बजाय शहरों में जाकर मजदूरी या अन्य काम करना पसंद करते हैं (व्यक्तिगत साक्षात्कार, कुचामन, 2022)। इससे परंपरागत ज्ञान के हस्तांतरण की श्रृंखला टूट रही है।

सरकारी अनुदान एवं वित्तपोषण की अपर्याप्तता भी एक बड़ी समस्या है। राजस्थान सरकार के कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा कुछ छात्रवृत्तियाँ एवं पुरस्कार दिए जाते हैं, किंतु ये पर्याप्त नहीं हैं। संगीत नाटक अकादेमी द्वारा प्रदत्त अनुदान भी चुनिंदा कलाकारों तक ही सीमित रहता है (संगीत नाटक अकादेमी, 2020)।

2. सामाजिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ

आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण ने राजस्थानी ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक रुचियों में आमूल परिवर्तन ला दिया है। 1990 के दशक से टेलीविजन का प्रचार–प्रसार तथा 2000 के दशक में मोबाइल फोन एवं इंटरनेट के आगमन ने परंपरागत मनोरंजन के सभी रूपों को गंभीर चुनौती दी है। गार्सिया एवं मार्टिनेज (2018) के अनुसार, जब भी किसी समाज में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का तेज प्रसार होता है, परंपरागत प्रदर्शन कलाएँ सबसे पहले प्रभावित होती हैं।

सामाजिक दृष्टि से ख्याल कलाकारों को पारंपरिक रूप से हेय दृष्टि से देखा जाता था। ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था में इन्हें "नीची जाति" माना जाता था। यद्यपि आज यह भेदभाव कम हुआ है, किंतु सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव अभी भी युवाओं को इस पेशे से दूर रखता है। रामदास (2015) का अध्ययन बताता है कि राजस्थान के लोककलाकारों में 73% से अधिक को सामाजिक उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, ख्याल प्रस्तुतियों में महिला पात्रों की भूमिका निभाने वाले पुरुष कलाकारों ("नट") को आज के सामाजिक परिवेश में अक्सर उपहास का पात्र बनाया जाता है। बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण इस परंपरागत नाट्य–शैली में महिलाओं के शामिल होने की भी माँग उठी है, जिससे परंपरागत प्रारूप में परिवर्तन आ रहा है (सिंह, 2018)।

3. तकनीकी एवं मीडिया चुनौतियाँ

डिजिटल क्रांति ने मनोरंजन उद्योग को जड़ों से बदल दिया है। नेटफ्लिक्स, यूट्यूब, अमेज़न प्राइम जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने दर्शकों को हर समय उच्च–गुणवत्ता वाला मनोरंजन उपलब्ध करा दिया है। ऐसे में खुले मैदान में कई घंटों की ख्याल–प्रस्तुति के लिए दर्शकों को जुटाना दिनोंदिन कठिन होता जा रहा है।

इसके विपरीत, कुछ विद्वान यह भी तर्क देते हैं कि डिजिटल प्लेटफॉर्म इन लोककलाओं के लिए एक नए अवसर के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। यूट्यूब पर कुचामनी ख्याल के कुछ वीडियो लाखों बार देखे गए हैं (गूगल, 2023)। किंतु समस्या यह है कि डिजिटल माध्यम में लाइव प्रस्तुति का वह जीवंत संवाद–भाव, दर्शकों की सक्रिय भागीदारी एवं सामूहिक अनुभव नष्ट हो जाता है जो ख्याल की आत्मा है।

प्रस्तुति के उपकरणों एवं तकनीक में भी अद्यतन की आवश्यकता है। परंपरागत ख्याल में ढोलक, हारमोनियम, झाँझ एवं शहनाई आदि वाद्ययंत्रों का उपयोग होता था। आज के दर्शक अधिक परिष्कृत ध्वनि–प्रणाली एवं प्रकाश–व्यवस्था की अपेक्षा रखते हैं, जिसका खर्च उठाना छोटे मंडलों के लिए कठिन है (यूनेस्को, 2016)।

4. प्रशिक्षण एवं गुरु–शिष्य परंपरा का क्षरण

ख्याल की गुरु–शिष्य परंपरा, जिसे "उस्ताद–शागिर्द" परंपरा भी कहते हैं, आज गंभीर संकट में है। परंपरागत रूप से ख्याल का ज्ञान मौखिक एवं प्रत्यक्ष प्रशिक्षण के माध्यम से हस्तांतरित होता था। गुरु अपने शिष्यों को न केवल संगीत एवं अभिनय की तकनीक सिखाते थे, बल्कि उन्हें ख्याल की आत्मा उसकी भावना, उसके मूल्य एवं उसकी सांस्कृतिक पहचान से भी परिचित कराते थे।

आज वरिष्ठ कलाकारों की संख्या तेजी से घट रही है। पिछले दो दशकों में कुचामनी ख्याल के कई वरिष्ठ उस्तादों का निधन हो चुका है और उनके साथ ही अनेक दुर्लभ गीत, संवाद एवं अभिनय–तकनीकें सदा के लिए लुप्त हो गई हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (2018) की एक रिपोर्ट में उल्लेख है कि भारत में प्रतिवर्ष सैकड़ों लोक–विधाएँ किसी न किसी रूप में अपनी पहचान खो रही हैं।

इसके अतिरिक्त, औपचारिक शिक्षण संस्थानों में ख्याल को पाठ्यक्रम में शामिल न करना भी एक बड़ी समस्या है। जबकि शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य के लिए विश्वविद्यालयों में विभाग हैं, लोककलाओं के लिए ऐसी व्यवस्था बहुत कम है। इससे प्रतिभाशाली युवाओं को इस क्षेत्र में करियर बनाने का अवसर नहीं मिलता।

5. लिखित दस्तावेज़ीकरण का अभाव

ख्याल की परंपरा मूलतः मौखिक रही है। इसके गीत, संवाद एवं नाट्य–रचनाएँ लिखित रूप में बहुत कम उपलब्ध हैं। यूनेस्को (2003) के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण की अभिसंधि के अनुसार, किसी भी अमूर्त विरासत को बचाने के लिए उसका उचित दस्तावेज़ीकरण अत्यावश्यक है। किंतु कुचामनी ख्याल के क्षेत्र में यह कार्य अत्यंत अपर्याप्त रहा है।

कुचामनी ख्याल की जो कुछ भी लिखित सामग्री उपलब्ध है, वह बिखरी हुई है और उसका कोई व्यवस्थित संकलन नहीं है। राजस्थान साहित्य अकादेमी एवं राजस्थान संगीत नाटक अकादेमी ने कुछ प्रयास किए हैं, किंतु ये अपर्याप्त हैं। दुर्लभ पांडुलिपियाँ एवं हस्तलेख, जो कुछ वरिष्ठ कलाकारों के पास हैं, उनका संरक्षण नहीं हो पा रहा।

सरकारी एवं संस्थागत प्रयास

राजस्थान सरकार ने ख्याल सहित विभिन्न लोककलाओं के संरक्षण हेतु कई योजनाएँ प्रारंभ की हैं। राजस्थान संगीत नाटक एवं कला अकादेमी, जोधपुर द्वारा वार्षिक लोककला महोत्सव का आयोजन किया जाता है जिसमें कुचामनी ख्याल को भी प्रमुखता दी जाती है। इसके अतिरिक्त, जिला स्तर पर लोककला प्रतियोगिताओं के माध्यम से नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया जाता है (राजस्थान सरकार, 2021)।

केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय की "सांस्कृतिक धरोहर योजना" के अंतर्गत कुचामनी ख्याल सहित कई लोककलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा वरिष्ठ लोककलाकारों को "उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार" एवं "रत्न सदस्यता" से सम्मानित किया जाता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने भी लोककलाओं के दस्तावेज़ीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हालाँकि, इन प्रयासों में कई कमियाँ हैं। प्रथमतः, सरकारी अनुदान अक्सर समय पर नहीं मिलता और कागज़ी कार्यवाही बहुत अधिक है। द्वितीयतः, लाभार्थियों के चयन में पारदर्शिता का अभाव है। तृतीयतः, लोककलाकारों को इन योजनाओं की जानकारी नहीं होती। चतुर्थतः, सरकारी महोत्सवों में प्रस्तुतियाँ अक्सर "प्रदर्शनी" बनकर रह जाती हैं, जिससे उनका मौलिक स्वरूप बदल जाता है (मिश्र, 2017)।

संरक्षण के उपाय एवं सुझाव

1. दस्तावेज़ीकरण एवं डिजिटल आर्काइव

कुचामनी ख्याल के संरक्षण की पहली एवं सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है व्यापक दस्तावेज़ीकरण। इसके लिए एक

बहु–स्तरीय डिजिटल आर्काइव बनाया जाना चाहिए जिसमें ख्याल की प्रस्तुतियों की वीडियो रिकॉर्डिंग, गीत–संग्रह, संवाद–पुस्तिकाएँ एवं कलाकारों के साक्षात्कार शामिल हों। राजस्थान विश्वविद्यालय एवं जोधपुर के जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय इस कार्य में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं।

यूनेस्को (2016) के दिशानिर्देशों के अनुसार, डिजिटल दस्तावेज़ीकरण में केवल श्रव्य–दृश्य सामग्री ही नहीं, बल्कि वेशभूषा, मंच–सज्जा, वाद्य–यंत्र एवं प्रस्तुति की तकनीकी विशेषताओं का भी विस्तृत विवरण होना चाहिए। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान एवं राष्ट्रीय सूचना–विज्ञान केंद्र इस डिजिटल आर्काइव के निर्माण एवं प्रबंधन में सहयोग दे सकते हैं।

2. शैक्षणिक संस्थाओं में समावेश

ख्याल को स्कूल एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करना अत्यंत आवश्यक है। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में राजस्थानी लोककलाओं का एक विस्तृत अध्याय जोड़ा जा सकता है। विश्वविद्यालयों में "लोक प्रदर्शन कला" विभाग खोले जाने चाहिए जहाँ ख्याल, नौटंकी, माँच आदि लोकनाट्यों को शिक्षा का विषय बनाया जाए।

इसके साथ ही, "गुरु–शिष्य परंपरा" योजना को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। वरिष्ठ कलाकारों को उचित मानदेय देकर उनके घर अथवा स्थानीय केंद्रों पर युवाओं को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाए। केरल में कलामंडलम जैसे संस्थान इस क्षेत्र में सफल मॉडल प्रस्तुत करते हैं, जिनसे प्रेरणा ली जा सकती है (मेनन, 2014)।

3. आर्थिक सहायता एवं रोजगार के अवसर

कलाकारों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए। सरकारी कार्यक्रमों, पर्यटन स्थलों एवं सांस्कृतिक केंद्रों पर ख्याल प्रस्तुतियों का नियमित आयोजन किया जाए और कलाकारों को उचित पारिश्रमिक दिया जाए। राजस्थान पर्यटन विभाग ख्याल को एक "सांस्कृतिक पर्यटन आकर्षण" के रूप में प्रस्तुत कर सकता है जिससे कलाकारों को स्थायी रोजगार मिल सके।

इसके अतिरिक्त, कलाकारों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ जैसे स्वास्थ्य बीमा, पेंशन एवं जीवन बीमा लागू की जानी चाहिए। "राजस्थान कलाकार कल्याण कोष" की स्थापना करके इस दिशा में ठोस कदम उठाया जा सकता है। मध्य प्रदेश सरकार की "मुख्यमंत्री कलाकार सहायता योजना" इस संदर्भ में एक अनुकरणीय उदाहरण है।

4. डिजिटल मीडिया का रचनात्मक उपयोग

डिजिटल मीडिया को केवल खतरे के रूप में नहीं, बल्कि एक अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। यूट्यूब, फेसबुक एवं इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स पर ख्याल की प्रस्तुतियाँ नियमित रूप से पोस्ट की जानी चाहिए। इसके लिए कलाकारों को डिजिटल साक्षरता एवं सोशल मीडिया प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाए।

"ख्याल डिजिटल" जैसी एक समर्पित ऑनलाइन पहल शुरू की जा सकती है जो लाइव स्ट्रीमिंग, पॉडकास्ट एवं वेबिनार के माध्यम से नई पीढ़ी तक इस कला को पहुँचाए। कोविड–19 महामारी के दौरान कई लोककलाकारों ने ऑनलाइन प्रस्तुतियाँ दीं और उन्हें व्यापक दर्शक मिले, जो यह सिद्ध करता है कि डिजिटल माध्यम में इस कला के लिए संभावनाएँ हैं (त्रिपाठी, 2021)।

5. अंतर्राष्ट्रीय पहचान एवं यूनेस्को सूचीकरण

कुचामनी ख्याल को यूनेस्को की "मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची" में सम्मिलित कराने के प्रयास किए जाने चाहिए। इससे न केवल अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिलेगी, बल्कि संरक्षण हेतु आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध होंगे। भारत सरकार पहले ही योग, कुम्भ मेला एवं रामलीला जैसी परंपराओं को यूनेस्को की सूची में शामिल करा चुकी है।

निष्कर्ष

कुचामनी ख्याल राजस्थानी लोक–संस्कृति की एक अनमोल धरोहर है जो सदियों से आम जनमानस को मनोरंजन, शिक्षा एवं सामाजिक चेतना प्रदान करती आई है। आज यह विधा गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। आर्थिक अनिश्चितता, सामाजिक उपेक्षा, डिजिटल प्रतिस्पर्धा, गुरु–शिष्य परंपरा का क्षरण एवं दस्तावेज़ीकरण का अभाव ये सभी कारक मिलकर इस परंपरा के अस्तित्व को खतरे में डाल रहे हैं।

किंतु यह स्थिति पूर्णतः निराशाजनक नहीं है। यदि सरकार, शैक्षणिक संस्थाएँ, स्वयंसेवी संस्थाएँ एवं समाज मिलकर प्रयास करें तो इस विधा को न केवल बचाया जा सकता है, बल्कि इसे नई ऊँचाइयों पर भी ले जाया जा सकता है। व्यापक दस्तावेज़ीकरण, शैक्षणिक समावेश, आर्थिक सहायता, डिजिटल माध्यम का रचनात्मक उपयोग एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान इन पाँच स्तंभों पर आधारित एक समन्वित संरक्षण रणनीति इस दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकती है।

अंततः यह स्मरण रखना आवश्यक है कि लोककला केवल मनोरंजन नहीं है वह किसी समाज की आत्मा है, उसकी सामूहिक स्मृति है, उसकी पहचान है। कुचामनी ख्याल को बचाना राजस्थान की उस आत्मा को बचाना है जो सदियों से इस धरती पर गूँजती आई है।

सन्दर्भ सूची

1. Bhanavat M. Rajasthan ki lok natya parampara [Folk theatre traditions of Rajasthan]. Rajasthan Sahitya Akademi, 1988.
2. Chaturvedi R. Lok natya aur samaj [Folk theatre and society]. Vani Prakashan, 2003.
3. Garcia M, Martinez J. Digital media and the erosion of traditional performing arts: A global perspective. Journal of Cultural Heritage,2018:34(2):112-128. doi:10.1016/j.culher.2017.09.001.
4. Indira Gandhi National Centre for the Arts. Intangible cultural heritage of India: Status and documentation. Ministry of Culture, Government of India, 2018.
5. Kothari K. Folk songs of Rajasthan. Rupayan Sansthan, 1975.
6. Menon S. Kerala Kalamandalam and the preservation of classical arts: A model for folk arts? Indian Theatre Journal,2014:8(1):45-62.
7. Mishra P. Sarkari anudan aur lok kalakar: Ek samiksha [Government grants and folk artists: A review]. Rajasthan Sahitya Patrika,2017:22(3):78-94.
8. National School of Drama. Status of folk performing arts in India: Survey report 2018–19. NSD Publications, 2019.
9. Ramdas K. Rajasthan ke lok kalakar: Samajik aur arthik sthiti [Folk artists of Rajasthan: Social and economic condition]. Rajasthan Hindi Granth Akademi, 2015.
10. Rajasthan Government. Annual report: Department of Art, Literature, Culture and Archaeology. Directorate of Art and Culture, 2021.
11. Sangeet Natak Akademi. Annual report 2019–2020. Ministry of Culture, Government of India, 2020.
12. Saxena S. Rajasthan ke loknatya [Folk theatres of Rajasthan]. Rajasthani Granthagar, 1985.

13. Sharma H. Kuchamani Khyal: Ek adhyayan [Kuchamani Khyal: A study]. Rajasthan Sahitya Akademi, 1990.
14. Singh A. Gender dynamics in Rajasthani folk theatre: Continuity and change. Journal of South Asian Studies,2018:41(4):789-805. doi:10.1080/00856401.2018.1497293.
15. Tripathi V. COVID-19 aur lok kalaon ka digital rupantar [COVID-19 and digital transformation of folk arts]. Cultural Studies Quarterly,2021:15(2):34-48.
16. UNESCO. Convention for the safeguarding of the intangible cultural heritage. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization, 2003.
17. UNESCO. Policy guidelines for the audiovisual documentation of intangible cultural heritage. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization, 2016.